B.A. II Hindi Hons.

'कृष्णभक्ति साहित्य की प्रवृत्तियाँ' का शेष अंश।

डॉ॰ सतीश चन्द्र पाठक
प्राध्यापक हिन्दी विभाग
एस॰ एस॰ कॉलेज, जहानाबाद।

(6) प्रकृति-चित्रण — सम्पूर्ण भक्तिसाहित्य में प्रकृति का स्वतंत्र वर्णन उपलब्ध नहीं होता। रामभक्ति साहित्य के समान ही कृष्णभक्ति साहित्य में भी यही प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। इस साहित्य में प्रकृति का चित्रण उद्दीपन या अलंकार के अप्रस्तुत विधान के रूप में हुआ है। फिर भी कृष्णभक्त कवियों ने प्रकृति के मनोरम, अनुकूल एवं कहीं-कहीं भयानक रूप का भी चित्रण किया है। यमुना के किनारे ~~[illegible]~~ वन, कुंजों की शोभा, यमुना नदी की शोभा तथा प्रकृति के विभिन्न रूपों की शोभा का मनोहारी वर्णन यहाँ सहज ही उपलब्ध है। यह वर्णन स्थिति एवं प्रसंग के अनुसार परिवर्तित भी होती जाती है। जैसे कृष्ण वियोग में यमुना का रूप सर्वथा परिवर्तित हो जाता है — "स्याम भई कालिन्दी अति कारी।" यहाँ यमुना कृष्णवियोग में कृशकाय हो जाती है, उसकी ~~बालुका~~ बालुका राशि ~~[illegible]~~ अश्रुओं के चूर्ण में रूपान्तरित हो जाती है। वैसे ही मधुवन की ~~शोभा~~ हरीतिमा में गोपियों की व्यथा और उसकी नीरसता दिखाई पड़ती है। तात्पर्य यह कि इस साहित्य में प्रकृति का वर्णन स्वतंत्र रूप से न होकर भावानुकूल एवं उद्दीपन के रूप में हुआ है किन्तु जो वर्णन उपलब्ध है वह अत्यन्त श्रेष्ठ, मनोहारी एवं मार्मिक है। हम कह सकते हैं कि प्रकृति का यहाँ मानवीकरण कर दिया गया है जिसे परवर्ती कवियों ने खूब ऊँचाई दी है। इस दृष्टि से कृष्णभक्ति साहित्य में प्रकृति परम्परागत रूप से तो उपस्थित है ही ~~[illegible]~~ यहाँ नवीनता की राह में भी प्रस्तुत होती दिखलाई पड़ती है।

(7) कृष्णभक्ति साहित्य में रीतितत्व :— इस साहित्य के साहित्यकारों में अलंकारों तथा साहित्यशास्त्र के प्रति विशेष आकर्षण परिलक्षित होता है। यही कारण है कि सूरदास और नन्ददास के साहित्य में शृंगार वर्णन के साथ ही रीति निरूपण की प्रवृत्ति भी दिखाई पड़ती है। सूरदास के प्रसिद्ध ग्रंथ साहित्य लहरी में अलंकारों के साथ-साथ नायिकाभेद का भी वर्णन उपलब्ध है। यहीं तो

सूरसागर में भी अनेक पदों में अलंकारों की ऐसी छटा दिखाई पड़ती है कि हृदय उत्फुल्ल हो उठता है:-

'अद्भुत एक अनुपम बाग

जुगल कमल पर गजवर क्रीड़त, तापर सिंह करत अनुराग।'

सूर के इस प्रसिद्ध पद में उपमा, रूपक और अन्य अलंकारों की छवि देखते ही बनती है। इसी प्रकार नन्ददास ने भी अपने प्रसिद्ध ग्रंथ रसमंजरी में नायिकाभेद, हाव, भाव, हेला, रति आदि का विस्तृत विवेचन किया है एवं विट्ठलदास ने भी रीतिपरक ग्रंथ की रचना की थी। चैतन्य सम्प्रदाय के कवियों तथा आचार्यों ने 'भक्ति को शास्त्रीय स्वरूप देने के लिए उज्ज्वलनीलमणि, भक्तिरसामृत सिन्धु जैसे ग्रंथों की रचना की थी। तात्पर्य यह कि कृष्णभक्ति साहित्य में रीतितत्व का समावेश हो चुका था जिसका अतिशय विस्तार रीतिकालीन ग्रंथों में देखा जा सकता है।

(8) सामाजिक पक्ष:- कृष्णभक्ति साहित्य प्रधानतः लीलावादी है, अर्थात् श्रीकृष्ण के द्वारा की गयी लीलाओं का समुच्चय है। यह लीला केवल लीला के लिए है। इसका उद्देश्य लीला से उत्पन्न आनन्द की प्राप्ति है। जैसे कृष्ण की बाललीलाओं का चित्रण हृदय में कितना आनन्द और आह्लाद उत्पन्न करता है किन्तु उसका कोई सामाजिक मूल्य नहीं है। वैसे ही संयोग एवं वियोग कालीन लीलाओं की अभिव्यक्ति है। किन्तु लीला वर्णन के क्रम में इन भक्तकवियों ने अनजाने में ही तत्कालीन सामाजिक स्थितियों का भी यथार्थ वर्णन किया है। सूर ने परीक्षित पश्चाताप तथा भागवत के कुछ अन्य प्रसंगों को चुनकर तत्कालीन जीवन की उद्देश्यहीनता एवं इन्द्रियपरायणता की आलोचना की है। भ्रमरगीत प्रसंग में कवि ने अलखवादी, ~~निर्गुणिया~~ निर्गुणवादियों, पाण्डित्याभिमानियों की खबर ली है, इसी प्रकार कलियुग के प्रभाव के वर्णन के क्रम में इन्होंने वर्णाश्रमधर्म के पतन, सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक विडम्बनाओं का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। इस दृष्टि से इनकी रचना वैयक्तिक होते हुए भी लोकमंगल की भावना से परिपूर्ण है।